DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-3,PSYCHOSEXUAL DEVELOPMENT STAGES

LECTURE-22

PSYCHOSEXUAL DEVELOPMENT STAGES

(मनोलैंगिक विकास की अवस्था)

फ्रायड के अनुसार लैंगिक शक्ति जिसे उन्होंने लिबिडो कहा है ,जन्म के समय से ही व्यक्ति में मौजूद होता है और उसके बाद कई मनोलैंगिक अवस्थाओ से होते हुए व्यक्ति के उम्र बीतने के साथ –साथ लैंगिक शक्ति का भी विकास होता है |मनोलैंगिक विकास के सिद्धांत का मुख्य सार यही है |फ्रायड के अनुसार मनोलैंगिक विकास के मुख्य पाँच अवस्थाएँ निम्नांकित है :-

(1)मुखावस्था (oral stage)

(2)गुदावस्था (anal stage)

(3)शिश्नावस्था (phallic stage)

(4)अव्यक्त अवस्था (latency stage)

(5)जननेन्द्रीयावस्था (genital stage)

इन पाँचो अवस्थाओ का वर्णन निम्नांकित है –

1.मुखावस्था –मुखावस्था मनोलैंगिक विकास की पहली अवस्था है जो जन्म से लेकर करीब –करीब 1 साल के उम्र तक का होता है |

जैसा की नाम से ही स्पष्ट है ,इस अवस्था का कामुकता क्षेत्र मुँह होता है |फलस्वरूप बच्चा मुँह द्वारा की जाने वाली साथी क्रियाओ जैसे चुसना ,निगलना ,जबड़ा से कोई चीज दबाना या जबड़ा में दाँत निकल आने पर दाँत से दबाना या जबड़ा में दाँत निकल आने पर दाँत से दबाना आदि द्वारा लैंगिक सुख प्राप्त करता है |

इस अवस्था को निम्नांकित दो भागो में बाँटा गया है |-

(1)मुखवर्त्ती चूषण की अवस्था -मुखवर्त्ती चूषण की अवस्था जन्म से लेकर प्रथम 6 महीनों तक का होता है |इस अवस्था में बच्चा स्तनपान द्वारा लैंगिक सुख प्राप्त करता है |उसे माँ के स्तन को चुसना अच्छा लगता है या जिन शिशुओ को बोतल का दूध पिलाया जाता है ,उसे रबर का निपुल चूसते रहना अच्छा लगता है |इस तरह से उस अवस्था में चूसने की क्रिया की प्रधानता होती है जो कभी –कभी अपनी चरम –सीमा पर पहुँचती है और ऐसी परिस्थिति में जब उसे स्तन चूसने या निपुल चूसने को नही मिलता है तो वह अपना अंगूठा ही चुसना प्रारंभ कर देता है |इस तरह से शिशु इस अवस्था में अपने शरीर से आनन्द प्राप्त करता है लेकिन शिशु को स्वयं इसकी कोई चेतना नही रहती है | उसे फ्रायड ने आत्मकामुकता या आत्मप्रेम कहा है जो शैशव लैंगिकता का एक मुख्य लक्षण है |

(ii)मुखवर्त्ती दंतदंशन की अवस्था –इस अवस्था की शुरुआत सामान्यत :7 वे महीना से होती है जब शिशुओं में दाँत निकलने को हो आते है |इस अवस्था के प्रारंभ होते ही शिशुओं को स्तनपान माँ बंद कर देती है जिसे दूध –छुड़ाई कहा जाता है |दूध –छुड़ाई की प्रक्रिया प्रारंभ होने से शिशुओं में कुंठा होता है जिससे उसे मानसिक आघात भी पहुँचता है |इसके परिणामस्वरूप वह अपने आहार के लिए स्वयं निर्देशित क्रियाएं करता है|

(2)गुदावस्था –मनोलैंगिक विकास का दूसरा स्तर गुदावस्था है जो करीब होता है जीवन के पहला साल समाप्त होने पर प्रारंभ होता है तथा दूसरा साल की अवधि समाप्त होने तक बनी होती है |दुसरे शब्दों में यह अवस्था इसे 3 साल तक के आयु के बीच होते है |इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र मुँह से हटकर शरीर के गुदा क्षेत्र में आ जाता है |फलस्वरूप बच्चे मल- मूत्र त्यागने से संबंधित क्रियाओं से आनन्द उठाते है |इस अवस्था में दो तरह की गुदा क्रियाएँ होती है |-

(i)गुदा –निष्कासन की अवस्था –जैसा कि उपर कहा जा चूका है ,इस अवस्था में शिशु को मल –मूत्र का परित्याग करने में लैंगिक सुख की प्राप्ति होती है क्योंकि ऐसा करने से उसका श्लेष्मल झिल्ली उत्तेजित हो जाता है जो उसके लैंगिक सुख में एक सक्रिय योगदान करता है |

(ii)गुदाधारणात्मक अवस्था –इस अवस्था में शिशु को मल –मूत्र को कुछ देर तक रोककर रखने में लैंगिक आनन्द आता है |मल- मूत्र को कुछ देर तक रोके रखने में शिशुओं के मूत्राशय एवं आँत में एक हल्का –सा तनाव उत्पन्न होता है जिससे उसे लैंगिक आनन्द मिलता है |परन्तु इस तनाव से वह अधिक देर तक आनन्दित नही हो सकता है ,क्योंकि उसे तो मल –मूत्र का त्याग कुछ देर के बाद करना ही पड़ता है |इससे

शिशुओं में निराशा उत्पन्न होता है जो बाद में चलकर विशेष व्यक्तित्व शिलगुणो का सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है |

(3) लिंग प्रधानावस्था या शिश्नावस्था – मनोलैंगिक विकास की तीसरी अवस्था शिश्नावस्था है जो चौथे से पाँचवे साल के दौरान उत्पन्न होती है | इस अवस्था में एक नया कामुकता क्षेत्र का विकास होता है यह नया कामुकता क्षेत्र जनेंन्द्रिय होता है |लड़कियों के जनेंन्द्रिय को योनी (vagina)तथा लड़कों के जनेंद्रिय को शिश्न (penis)कहा जाता है |

फ्रायड का कहना था कि इस अवस्था में बच्चे अपने जनेंद्रिय को छुते है, मलते है तथा खीचते है |इससे उनके जनेंद्रियों में संवेदन उत्पन्न होता है और उन्हें लैंगिक आनन्द की प्राप्ति होती है |यधपि इस अवस्था में मुखावस्था तथा गुदावस्था से उत्पन्न अनुभूतियों का प्रभाव बिल्कुल ही समाप्त हो जाता है |

फ्रायड का कहना है कि इस अवस्था में लड़का में माता-मनोग्रन्थि (oedipus complex) का विकास तथा लड़कियों में पितृ –मनोग्रन्थि का विकास होता है |जब लड़का में माता –मनोग्रन्थि का तथा लड़की में पितृ –मनोग्रन्थि का सफलतापूर्वक समाधान हो जाता है तो इससे इनमें नैतिकता का विकास होता है |प्राय:इन मनोग्रन्थियों का समाधान दमन द्वारा तथा अपने माता –पिता के साथ आत्मिकरण करके किया जाता है|इसका परिणाम यह होता है कि लड़कों तथा लड़कियों में पराहं का विकास प्रारंभ होता जाता है |

(4)अव्यक्तावस्था या निलिनावस्था –मनोलैंगिक विकास की यह चौथी अवस्था है जो शैश्नावस्था के बाद प्रारंभ होता है |यह अवस्था 6 या 7 साल के उम्र से प्रारंभ होकर लगभग 12 वर्ष की आयु तक रहती है |

इस अवस्था में बच्चों में कोई नया कामुकता क्षेत्र नही विकसित होता है तथा साथ -ही -साथ लैंगिक इच्छाएँ भी सुषुप्त रहती है |इस अवस्था में बच्चे अपनी लैंगिक इच्छाओ को अनैतिक समझकर उसका दमन कर देते है तथा अन्य बाहरी चीजों एवं घटनाओं में अधिक रूचि दिखलाना प्रारंभ कर देते है |

(5) जननेन्द्रियावस्था –मनोलैंगिक विकास की यह अन्तिम अवस्था है जो 13 वर्ष की आयु से प्रारंभ होकर निरन्तर चलता रहता है |इस अवस्था में किशोरावस्था तथा व्यस्कावस्था दोनों ही सम्मिलित होते है |

इस अवस्था का प्रारंभ होते ही किशोरों एवं किशोरियों में अनेक तरह के शारीरिक परिवर्तन होते है तथा ग्रन्थीय विकास परिपक्व हो जाता है|

इसका परिणाम यह होता है कि पुरुषों में मुँछ ,दाढ़ी तथा स्त्रियों में स्तन का विकास एवं मासिक धर्म की शुरुआत हो जाती है |जननेन्द्रिया वस्था के प्रारंभ के के कुछ वर्ष जो किशोरावस्था के वर्ष होते है ,में व्यक्तियों के अपने ही लिंग के व्यक्तियों के साथ रहने ,उठने –बैठने एवं बातचीत करने की प्रवृत्ति अधिक तीव्र होती है |इसे फ्रायड ने समलिंगकामुकता कहा है |

फ्रायड के इस मनोलैंगिक विकास के सिद्धांत की आलोचना कुछ लोगों ने किया है |मनोलैंगिक विकास के पाँच अवस्थाओं में शिश्नावस्था की तीव्र आलोचना की गयी है |इन आलोचनाओं के बाबजूद भी फ्रायड का मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है और आज भी कई मनोविश्लेषकों जैसे एडलर एवं युंग जो फ्रायड के मनोविश्लेषण की विधियों से अपने आप को अलग कर लिए है ,व्यक्तित्व के विकास

की व्याख्या में फ्रायड के संप्रत्ययों का प्रयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्क्ष रूप से किये है |